सी.आर.पी.एफ
शौर्यगाथाएँ
Vol.3
CRP
शूरवीर
प्रकाश
सत्य घटनाओं पर आधारित

शौर्य चक्र

शत्रु के साथ सीधी मुठभेड़ के दौरान दिखायी गयी वीरता और अदम्य साहस के अनुकरणीय उदाहरणों और इसी क्रम में अपने प्राण तक न्यौछावर कर देने वाले कार्मिकों को यह पदक प्रदान किया जाता है। यह पदक सैन्य कर्मियों के अतिरिक्त, पुलिस कर्मियों एवं नागरिकों को भी प्रदान किया जाता है। वरीयता के क्रम में यह वीर चक्र के समकक्ष है तथा शांति काल में यह प्रतिविद्रोह एवं आतंकवाद विरोधी कार्यवाहियों में स्थापित वीरता और साहस के उच्च मानदंडों के लिए दिया जाता है। वरीयता की सूची में शांति काल में दिए जाने वाले पदकों के क्रम में यह अशोक चक्र और कीर्ति चक्र के बाद तीसरे स्थान पर आता है। 1967 से पूर्व यह अशोक चक्र श्रेणी–3 के रूप में जाना जाता था।

के.रि.पु.बल

शौर्यगाथाएँ

शूरवीर प्रकाश

शौर्य चक्र

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

प्रस्तुतिः विकास सेठी
आलेखः अनिल
चित्रांकनः सुर्बोज्योति भट्टाचार्य
कवरः राज चौधरी
रंगकारः देबोलीना चक्रवर्ती
शब्दांकनः आनन्द द्विवेदी

Published by Pixel2Pixel on behalf of Directorate General, CRPF

Pixel2Pixel
259, 3rd Floor, Hauz Rani,
Opp Max Hospital, Saket,
New Delhi - 110017

www.pixel2pixel.in
info@pixel2pixel.in

Copyright © 2016 Central Reserve Police Force

Printed by Printland Digital (I) Pvt. Ltd. in February, 2016

All right reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher. For permission requests, write to the publisher, addressed "Attention: Permissions Coordinator," at the address below:

Inspector General (Operations)

Central Reserve Police Force

Email: igops@crpf.gov.in

सीआरपीएफ की वार्षिक जयंती परेड में गृह मंत्री के सामने उप–कमांडेन्ट प्रकाश रंजन मिश्रा खड़े हैं ।

पार्श्व में उद्घोषिका की आवाज गूंज रही है ।

30 जनवरी, 2007 को चतरा जिले के कोरा गाँव के पास करीब 250 माओवादियों ने 136 बटालियन की एक टुकड़ी पर घात लगा कर हमला करते हुए करीब 22 आई.ई.डी. विस्फोट किये। बल की टुकड़ी ने सहायक कमांडेन्ट प्रकाश रंजन मिश्रा के नेतृत्व में न केवल इस हमले का सामना किया, अपितु बहादुरी से लड़ते हुए बिना अपना कोई नुकसान किये माओवादियों को अपना गोला– बारूद छोड़ कर भाग जाने पर भी मजबूर कर दिया। इस आपरेशन में दिखायी गयी अदम्य वीरता, साहस, कर्तव्यपरायणता और नेतृत्व कुशलता के लिए सहायक कमांडेन्ट प्रकाश रंजन मिश्रा को वीरता के पुलिस पदक से अलंकृत किया जा रहा है।

गृह मंत्री श्री पी. चिदम्बरम प्रकाश रंजन मिश्रा को पदक लगाते हैं ।

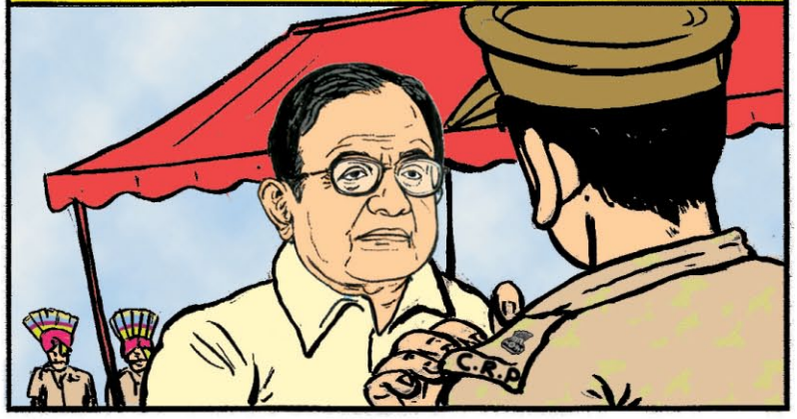

प्रकाश रंजन के घर पर सभी लोग टेलीविज़न पर यह परेड देख रहे हैं।

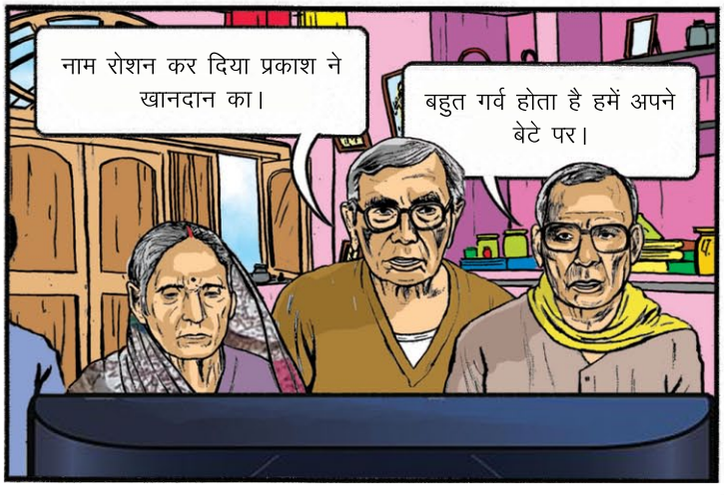

जरूर भौजी, हमारा प्रकाश काम ही ऐसा किया है, मिठाई तो बांटनी ही चाहिए। पूरा जहानाबाद गर्व कर रहा है अपने प्रकाश पर।

आ रहे हैं न भईया कल, जी भर कर बाँट लीजिए मिठाई और हाँ चाची, ऐसा न हो कि भईया के आते ही आप हमें भूल जाएं।

हाँ, हमारे भूले से ही इतने बड़े हो गये तुम।

अरे चाची आप तो नाराज हो गई। हम तो मजाक कर रहे थे।

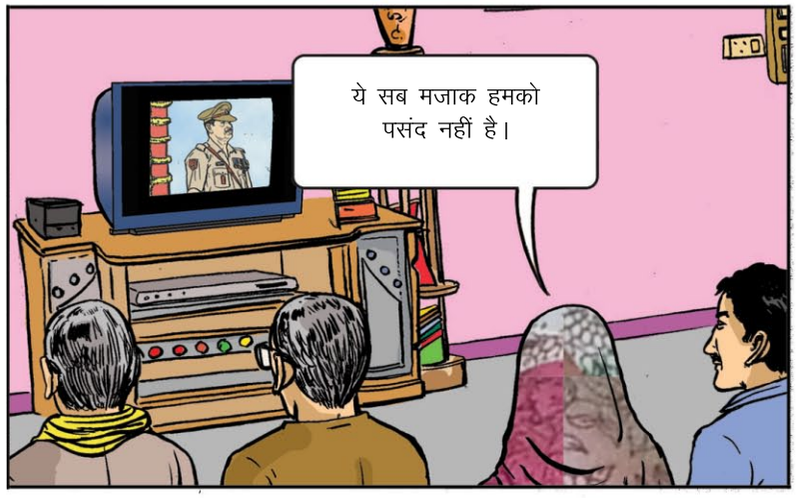
ये सब मजाक हमको पसंद नहीं है।

अच्छा चाची, कान पकड़े जो दोबारा ऐसी बात कहूँ तो..... अब तो हँस दो।

हट मसखरा.... भईया जी ये आपका चारों बेटा एक दम मसखरा है।

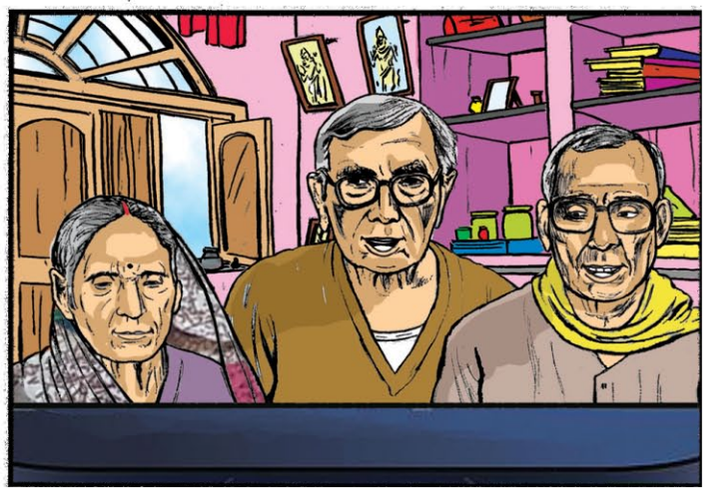

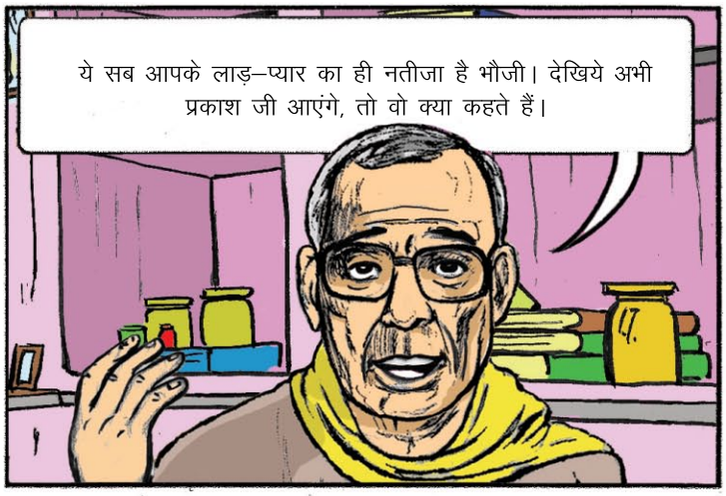

ये सब आपके लाड़–प्यार का ही नतीजा है भौजी। देखिये अभी प्रकाश जी आएंगे, तो वो क्या कहते हैं।
अरे उसका तो बात ही मत कीजिए, उसका तो जान बसता है हम में, अरे कौन कहेगा ये हमारे पेट के जने नहीं हैं।
पेट के जने नहीं हैं तो क्या हुआ भौजी, पाला तो आपने ही है। कन्हैया जी देवकी मैया से ज्यादा जसोदा मैया के लाड़ले थे या नहीं।
ये बात आप सही कह रहें हैं भैया जी । प्रकाश रंजन में तो हमारा भी जान बसता है।
देखा, देखा बड़के काका, हम कह रहे थे न ?
अरे चुप ।
प्रकाश आज ही दिल्ली से लौटा है। वह बरामदे में बैठे ताऊ धर्मदेव और पिता बामदेव मिश्रा के बारी–बारी से पाँव छूता है और छोटे भाई प्रभात रंजन से गले मिलता है।
प्रणाम बड़के काका।
प्रणाम, प्रणाम जीते रहो खूब नाम करो ।

आपके आर्शीवाद से भाई साहब अच्छा काम कर रहे हैं प्रकाश।
हमका मालूम है हमारा बचवा खूब तरक्की करेगा । मेडल का बहुत बहुत मुबारक हो बेटा ।
सब आपका और बाबा का आर्शीवाद है बड़के काका।
प्रकाश प्रभात से गले मिलता है।
मेडल की बधाई हो भईया।
कैसा है प्रभात ?
बस भईया ठीक हूँ, आप रहेंगे न अभी.... मेरी भी छुट्टी है।
हाँ, ठहर अपना मेडल दिखाता हूँ आप सब को ।
प्रकाश हाथ में पकड़ा मेडल अपने ताऊ धर्मदेव के हाथ मे देता है । धर्मदेव गर्व से मेडल को देखते हैं ।
ये देखिये वीरता का पुलिस पदक, गृह मंत्री खुद अपने हाथ से हमारे सीने पर लगाये हैं।

अरे वाह, अरे देखो तुम भी देखो बामदेव अपने सपूत का कारनामा । नाम रोशन कर दिया हमारा ।

इ सब बाबू जी के संस्कार का ही परिणाम है, आज अगर तुम्हारे दादा जीवित होते तो बहुत खुश होते। सच बेटवा, बहुत गर्व होता है हमें तुम पर ।

बेटवा अपने बाबा का सीख हमेशा याद रखना। सच और ईमानदारी का रास्ता कभी नहीं छोड़ना, फिर देखना एक बार तो स्वयं ईश्वर भी सामने आ जाएँ, तो तुम्हारा निश्चय देखकर पलट जाएँगे । याद रखना बेटवा विनय वीर व्यक्ति का सबसे बड़ा गुण है, कभी घमंड का बोल नहीं बोलना, सफलता को सिर पर नहीं चढ़ने देना, अपना पैर हमेशा जमीन पर रखना, और गरीब पर कभी अन्याय न करना, ना होने देना ।

बाबा और आपकी कोई बात मैं कभी भूला नहीं हूँ बड़के काका ।

हम जानते हैं बेटवा, हमारा प्रकाश को कोई ईमानदारी और न्याय के रास्ते से नहीं डिगा सकता । हमका अपने भतीजा पर और बाबा की शिक्षा पर पूरा विश्वास है । अरी सुनती हो, देखो तुम्हारा लाडला क्या लाया है तुम्हारे वास्ते ।

क्या है, काहे पुकार रहे हैं ?

देखो, तुम्हारे लाडले को सरकार ने ये पदक दिया है वीरता के लिये ।

जानते हैं प्रकाश जी सबसे पहले हमें ही दिखाये हैं अपना पदक ।

बड़के काका, चाची को हमने अपना पदक दिखा दिया है ।

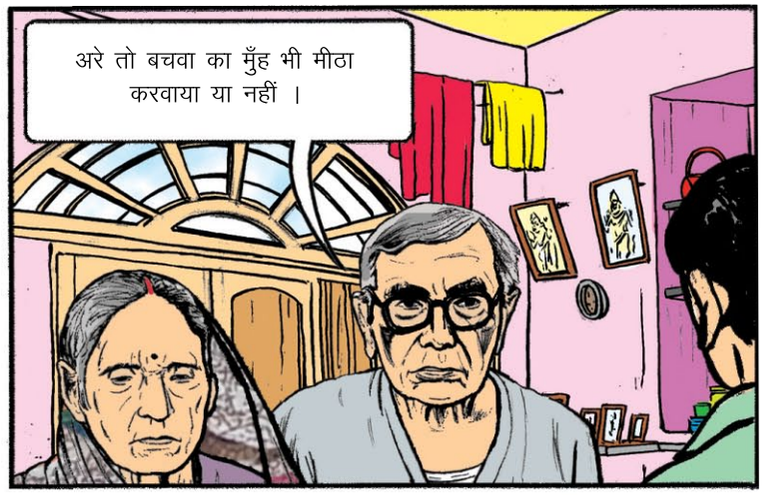
अरे तो बचवा का मुँह भी मीठा करवाया या नहीं ।

खीर बना रहे हैं हम अपने बेटवा के लिये । आज अगर इसकी महतारी गिरिजा जिंदा होती तो कितना खुश होती ।

चाची, माँ नहीं तो क्या हुआ। तुम तो हो न, मैंने तो आपको ही अपनी माँ माना है, क्यों प्रभात ?

हाँ भईया चाची भी, हम चारों भाईयों में तुम ही को ज्यादा चाहती हैं।
तुम फिर शुरू हो गये प्रभात । अरे ऐसा हम का किये हैं, जो तुम को लगता है कि हम प्रकाश जी को ज्यादा प्रेम करते हैं।

अरे चाची छोड़ो न, आप जानती हैं, उसे आपको परेशान करने में मजा आता है।

अरे चल हट बहुत बदमाश हो गये हो तुम दोनों । हम सब समझते हैं तुम्हारी शरारत, जाओ अपने दोस्तों से मिल आओ। कब से राह देख रहे हैं । कब तक इन के बीच बैठे रहोगे ?

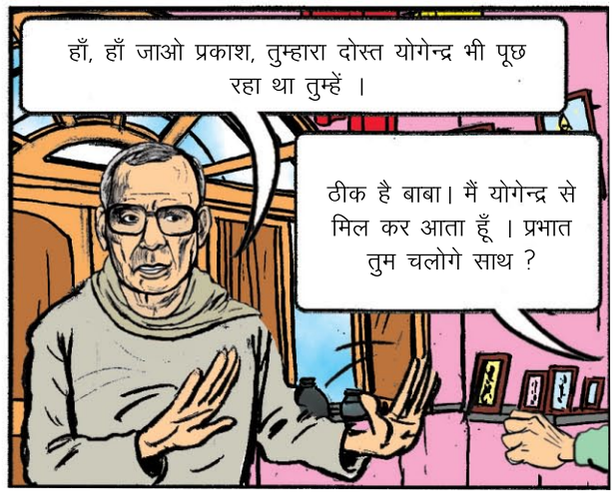
हाँ, हाँ जाओ प्रकाश, तुम्हारा दोस्त योगेन्द्र भी पूछ रहा था तुम्हें ।
ठीक है बाबा। मैं योगेन्द्र से मिल कर आता हूँ । प्रभात तुम चलोगे साथ ?

नहीं भईया। आप जाओ, मुझे कुछ काम है।

ठीक है, अच्छा बाबा मैं अभी आता हूँ।

हाँ, हाँ जाओ बेटवा।

अरे जा तो रहे हो, मगर रास्ता में कोई साँप–वाँप दिख जाये, तो उसी को पकड़ने मत बैठ जाना । छोड़ दो अब इ सब हरकतें । बड़े हो गये हो ।

वादा करता हूँ चाची, किसी साँप के पीछे नहीं भागूंगा और किसी साँप को मारूंगा भी नहीं।

बाहर निकल जाता है ।

बस इसका यही शौक हमारी समझ में नहीं आता है, साँप पकड़ना और उसको मारना। ये कौन सा शौक हुआ।

हमारा बेटवा का सभी बात अनूठा है । साँप को पकड़ने का शौक भी ।

बाबूजी आपको याद है, जब दरवाजे पर गेहूंवन के फन पर पैर रख दिये थे प्रकाश भईया ।

हाँ, अच्छी तरह याद है ।

अपनी किशोरावस्था में प्रकाश अपने घर की तरफ आ रहा था कि घर के मुख्य दरवाजे पर फन फैलाये बैठे एक विशाल कोबरा पर उसका पैर पड़ जाता है । कोबरा उसकी पूरी टाँग पर लिपट जाता है । बरामदे में खड़ी बसंती यह देखती है तो चिल्लाती है ।

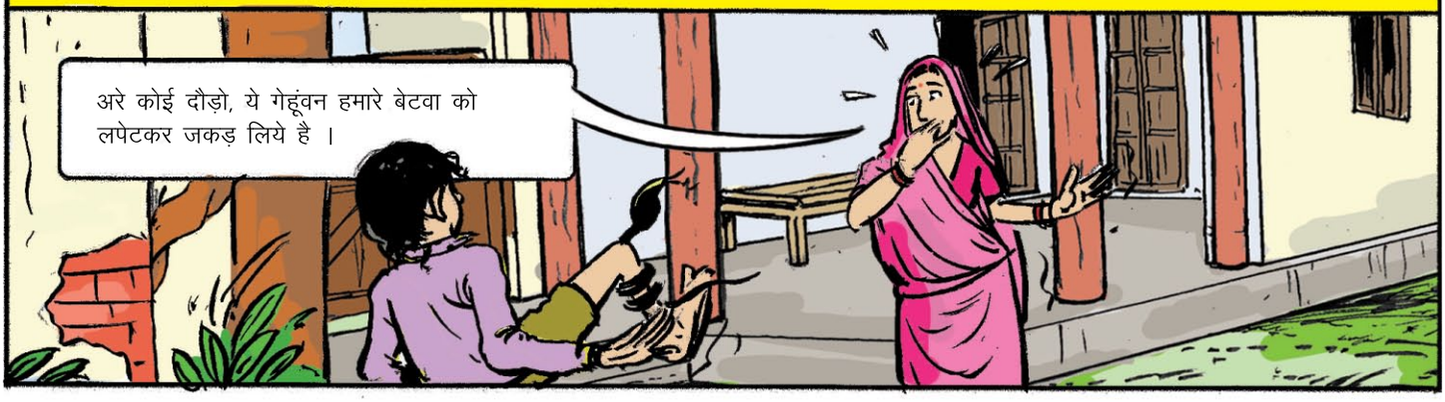

कोई आये इससे पहले ही प्रकाश अपने एक हाथ से नाग का फन पकड़ कर दूसरे हाथ से उसकी पकड़ छुड़ाकर उसे दूर फेंक देता है ।

उस घटना को याद कर सभी लोग सिहर जाते हैं ।

अरे शुरू से ही इसका लक्षण ऐसा है । वो कहते हैं ना, होनहार वीरवान के होत चिकने पात । आपको याद है वो जो नक्सली टोला वाला किसनवा पीछे से हमारा सागवान का पेड़ काट लिया था ।

अरे बाप रे बाप, याद ना दिलाइये, हमारा तो खून ही सूख गया था । आज भी याद है । कैसे दरवाजे पर खड़ा होकर चिल्ला रहा था ।

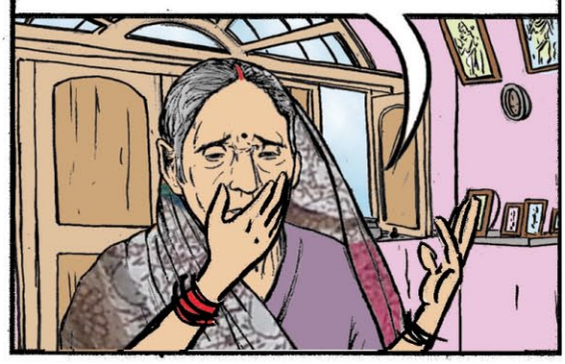

किशोर प्रकाश अपने घर के दरवाजे पर खड़ा होकर क्रोध में चिल्ला रहा है ।

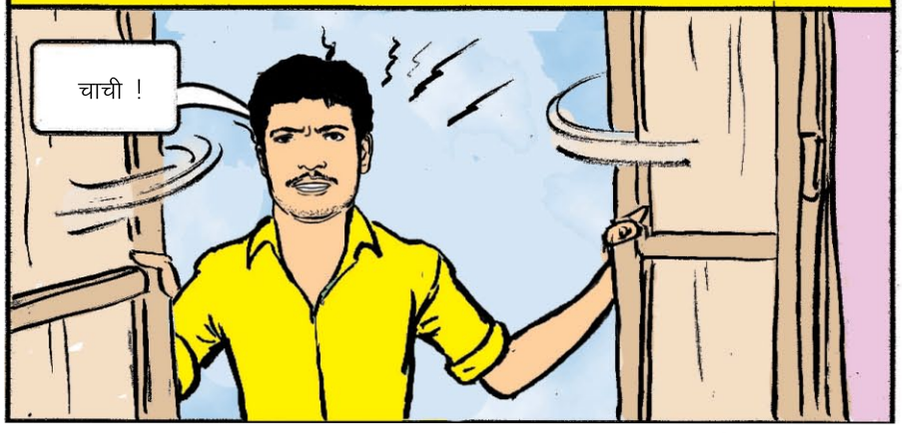

वापस जाने के लिये पलट जाता है ।

प्रकाश को रास्ते में उसका दोस्त योगेन्द्र मिलता है ।

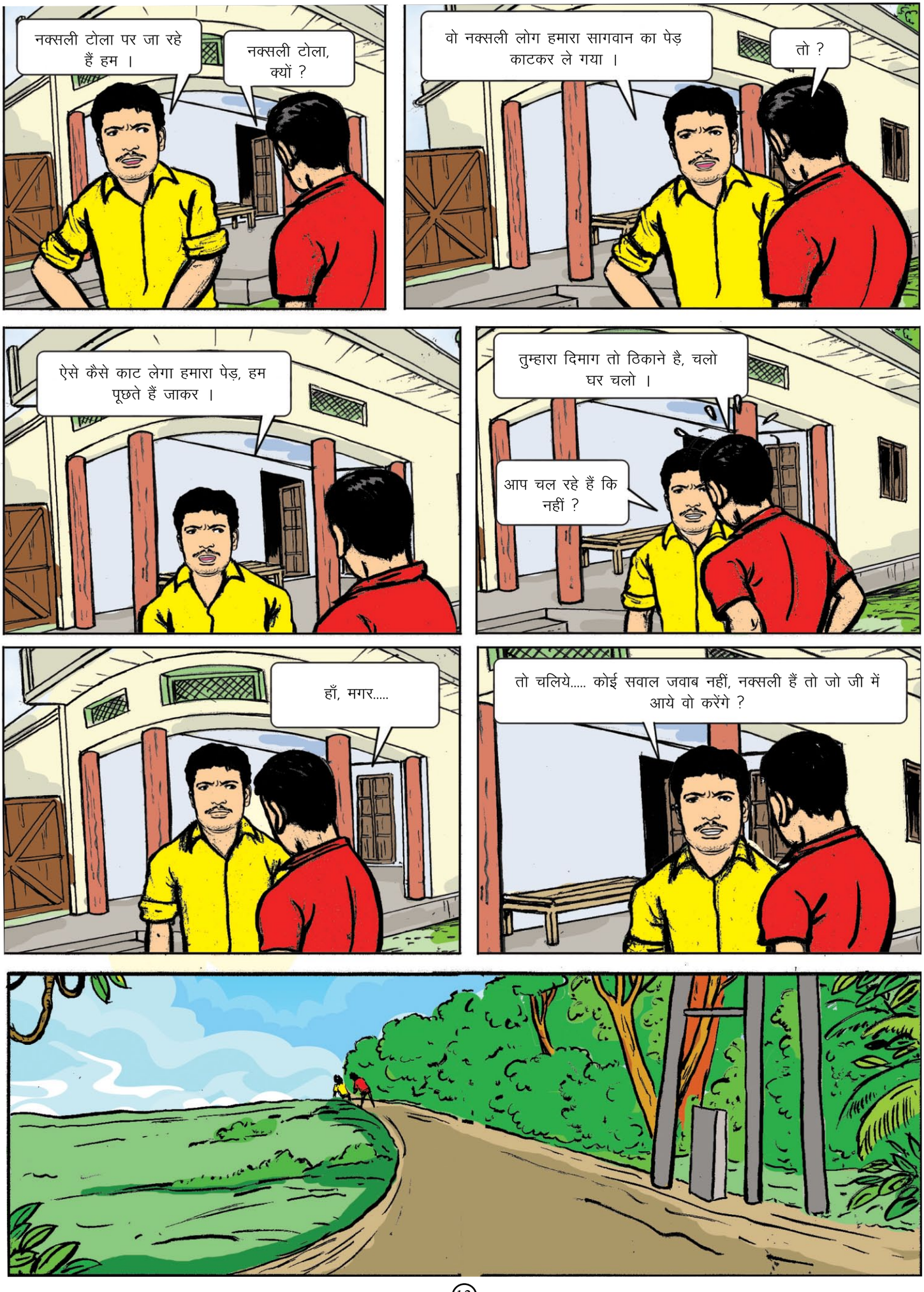
नक्सली टोला पर जा रहे हैं हम ।
नक्सली टोला, क्यों ?
वो नक्सली लोग हमारा सागवान का पेड़ काटकर ले गया ।
तो ?
ऐसे कैसे काट लेगा हमारा पेड़, हम पूछते हैं जाकर ।
तुम्हारा दिमाग तो ठिकाने है, चलो घर चलो ।
आप चल रहे हैं कि नहीं ?
हाँ, मगर.....
तो चलिये..... कोई सवाल जवाब नहीं, नक्सली हैं तो जो जी में आये वो करेंगे ?

गाँव से कुछ बाहर नक्सली अपने टोले में बैठे थे कि प्रकाश अपने दोस्त योगेन्द्र के साथ वहाँ पहुँचता है।

क्या है रे, काहे दनदनाते हुये दौड़े चले आ रहे हो, कौनो पुलिस की रेड की खबर है क्या ?

हमारा सागवान का पेड़ काहे काटा ?

क्या ? अरे महेन्द्र ये छोकरा कौन है रे, क्या बोल रहा है ये ?

कामरेड, पंडुयी हाई स्कूल के हैड मास्टर बाम देव मिश्रा का बेटा है । आज वो राईफल का बट बनाने के लिये एक सागवान का पेड़ काटा है इनके बगीचे से, उसी की बात कर रहा है।

वो पेड़ हमारा था, हमने लगाया था ।

अरे तो तुमने तो गाँव में हजारों पेड़ लगाया है, तो सारा पर तुम्हारा हक हो गया क्या ? ज्यादा ना टरटराओ, अभी तो पेड़ काटे हैं, मुंड़ी काटते भी देर नहीं लगेगी हमें !

अरे ऐसे कैसे काट दोगे मुंड़ी, हमने हाथ में चूड़ी पहना है का ?

तो का करोगे, मुकाबला करोगे हमसे ?

हाँ करेंगे मुकाबला, अगर हिम्मत है तो ई पिस्तौल बन्दूक फेंककर हमसे लड़िये। ये बन्दूक पिस्तौल के दम पर गाँव वालों को डरा कर बड़े नक्सली बने फिरते हैं ।

ऐ बबुआ, बहुत जोश है तुम्हारे खून में, थोड़ा संभल कर रहिये वरना नुकसान हो जायेगा ।

वही तो पूछ रहे हैं क्या नुकसान हो जायेगा ? मारियेगा हमें ? तो मारिये ना, यही तो काम करते हैं आप, निहत्थे, ग़रीब, कमजोर गाँव वालों को मारते हैं, धमकाते हैं । मगर कह दे रहे हैं, ना हम डरने वाले हैं, ना कमजोर । मर जायेंगे मगर मुकाबला करेंगे आपसे ।

आपकी बहादुरी से हम बहुत खुश हैं बबुआ । का नाम है तुम्हारा ?

प्रकाश रंजन मिश्रा नाम है हमारा। लिख लीजिये और बता दीजिये अपना ई सब चमचा लोग को । अगर आज के बाद हमारा किसी पेड़ को हाथ लगाया, तो हमसे बुरा कोई ना होगा । चल योगेन्द्र ।

योगेन्द्र का हाथ पकड़ कर बाहर निकल जाता है ।

कामरेड आपने कुछ कहा नहीं। वो कल का छोकरा इतनी बात बोल कर चला गया ।

वो छोकरा नहीं, बारूद का ढेर है, उसे छेड़ना नहीं । और सुनो, जाकर हैड मास्टर साहब से कह दो अपने बेटे को संभालकर रखे और हाँ, जहां तक हो सके इस लड़के का रास्ता ना ही काटो तो अच्छा है।

प्रकाश अपने पिता बामदेव के सामने खड़ा है । उनके हाथ में एक छड़ी है । उनके पास ही धर्मदेव भी खड़े हैं ।

प्रकाश चुप रहता है ।

देख रहे हैं भईया, क्या बोल रहा है ये। आप ही समझाइये इसको।

बेटवा तुम एक काम करो, इन्टर का परीक्षा दे दिये हो ना, हम जानते हैं हाई स्कूल की ही तरह इस बार भी टॉप करेगा हमारा बेटवा । तुम पटना चले जाओ ।

पटना ?

हाँ, आगे की पढ़ाई के लिये पटना यूनिवर्सिटी में दाखिला ले लो ।

नहीं बड़के काका, हम इनके डर से भागने वाले नहीं हैं । हम यहीं जहानाबाद में पढ़ेंगें।

नहीं बेटवा, हम कह दिये बस । जाओ जाके पटना जाने की तैयारी करो ।

अपने बरामदे में बैठे बामदेव, धर्मदेव और बसंती देवी उन दिनों को याद कर रहे हैं ।

अच्छा हुआ आपने उसे आगे पढ़ाई के लिये पटना भेज दिया । वर्ना यहाँ तो इसका रोज का यही झगड़ा रहता ।

हाँ, अच्छा हुआ सी.आर.पी.एफ. में अफसर हो गये बेटवा ।

और अब तो और तरक्की हो गया है । मगर बदला नहीं बिल्कुल भी, आज भी वैसा ही है जैसा पहले था ।

अच्छा है, सच्चाई, ईमानदारी और न्याय की आग तो हमेशा अन्दर जलती ही रहनी चाहिए । जो अन्याय को देखकर आँख मूंद ले, वो कायर है । और हमे गर्व है कि हमारा प्रकाश कायर नहीं है । हम बहुत भाग्यवान हैं जो भगवान हमें प्रकाश जैसा भतीजा दिये हैं ।

इधर घर पर सब लोग बैठे यह बातें कर रहे थे, उधर प्रकाश अपने मित्र योगेन्द्र के साथ गाँव के बाहर एक टेकरी पर बैठा उसके साथ बातें कर रहा था ।

खुश हो ?

हाँ, बहुत खुश हूँ ।

नक्सलियों से तो वैसे भी तेरी पुरानी दुश्मनी है ।

हाँ अब मौका मिला है, उनसे पुराना हिसाब चुकता करने का ।

एक पेड़ का इतना हरजाना ?

ये पेड़ का हरजाना नहीं है योगेन्द्र, ये उन जख्मों की कीमत है, जो इन नक्सलियों ने हमारी जमीन, हमारे लोगों को दिये हैं । इनके कारनामे सुनोगे तो खून खौल जायेगा ।

यह मेडल तो तुम्हे चतरा में मिला है ना, जब तुम एक अम्बुश में फंसे थे ।

हाँ, 30 जनवरी, 2007 की बात है, नक्सलियों ने कौरा गाँव में चार घरों को बारूद लगाकर उड़ा दिया था । हम अपनी पार्टी के साथ वहाँ गये थे ।

जब लौट रहे थे तो नक्सलियों ने रास्ते में सतवाहिनी नदी के पुल पर अम्बुश लगा रखा था । मुझे शक हो गया और मैंने अपनी पूरी पार्टी को पुल से पहले ही रोक दिया ।

हमारे नाले से पहले रूकने से नक्सली बौखला गये । करीब 200 से 250 नक्सली थे । नाले के दोनों तरफ पहाड़ियों पर, 22 बारूदी सुरंगों का विस्फोट किया उन्होने ।

हमने मुकाबला कर उन्हें न केवल खदेड़ दिया बल्कि भागते हुये नकसलियों से 18 बम और 655 किलो बारूद भी छीन लिया ।

हाँ, बहादुर तो तुम बचपन से ही हो। पूरा गाँव जानता है, कैसे जहरीले साँपो को उनकी दुम से पकड़ कर खेला करते थे तुम ।

ये नक्सली भी जहरीले नाग ही हैं ।

यह अपनो को ही डसते हैं। भोले–भाले गाँव वालों पर जुल्म ढ़ाते हैं । इनसे तो लड़ना ही होगा।

सच कह रहे हो प्रकाश नाम रोशन कर दिये तुम अपने गाँव केंदुआ का । अब लोग केंदुआ और जहानाबाद को नक्सलियों के नही प्रकाश रंजन मिश्रा के नाम से जानने लगे हैं।

दोनों हँसते हैं ।

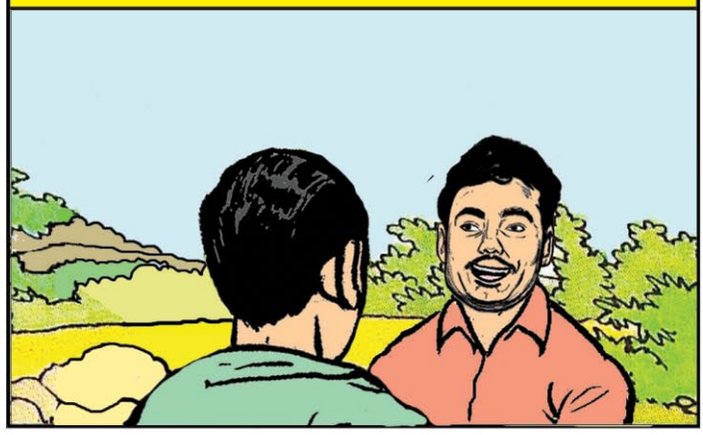

उसी रात प्रकाश अपने बडे काका धर्मदेव मिश्रा के पैर दबा रहा है ।

बेटवा, पूरा जहानाबाद इलाके में हमारे परिवार ने बहुत इज्जत कमाया है । हमारे परिवार ने कभी कोई गलत काम नहीं किया ।

हम जानते नहीं क्या बड़के काका । विश्वास रखिये हम आपके और बाबा के नाम को कभी बट्टा नहीं लगने देंगें ।

हम जानते हैं रे बेटवा । हमारे बाबा, तुम्हारे दादा कहा करते थे कि तुम्हारा ललाट पर लिखा है, बहुत नाम करोगे, बहुत आगे जाओगे तुम । और तुम साबित किये हो कि तुम्हारे बारे में बाबा का भविष्यवाणी कितना सच था । वीरता का पुलिस पदक जीत लिये तुम । हमको बहुत गर्व है तुम पर बेटवा ।

बड़के काका, बाबा और आपका आर्शीवाद रहा ना, तो आपके चरणों में हम ऐसे पदकों की कतार लगा देंगें ।

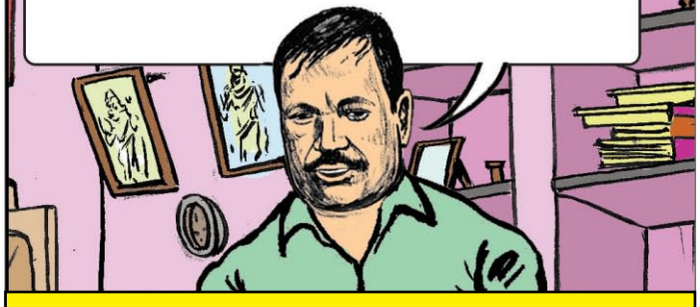

और प्रकाश रंजन ने जो कहा कर दिखाया ।

28 जुलाई, 2008 को हजारीबाग जिले के तिलेया गाँव में 300 लोगो की मौजूदगी के बावजूद बेहद कुशलता से आपरेशन को अंजाम देते हुए माओवादियों के जोनल कमांडर निरंजन मांझी और उसके दो सहयोगियों का सफाया।

उप–कमांडेन्ट प्रकाश रंजन मिश्रा राष्ट्रपति के वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित । गंभीर रूप से घायल होने के कारण उन्हें यह पदक अस्पताल में प्रदान किया गया।

18 अगस्त 2008, हजारीबाग के केरेडारी के घने जंगल में बसे गाँव नोनियाडीह में नक्सलियों के घर में घुसकर कुख्यात नक्सली केलू मांझी उर्फ सुमन मांझी उर्फ परवेज दा का सफाया ।

प्रकाश रंजन मिश्रा – वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित ।

16 सितम्बर 2008, हजारीबाग और चतरा के घने जंगल में नक्सलियों के कृष्णा यादव ग्रुप के कुख्यात नक्सली जितेन्द्र यादव का सफाया ।

प्रकाश रंजन मिश्रा – वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित ।

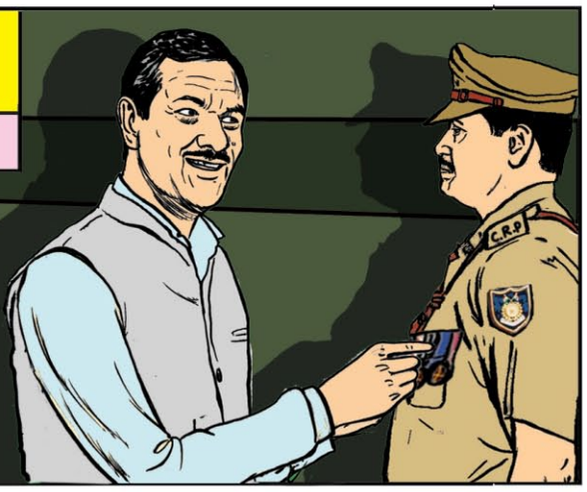

प्रकाश रंजन मिश्रा यहीं नही रूके, अभी तो कई और मंजिलें बाकी थी । कई और रास्ते प्रतीक्षा में थे ।

17 सितंबर, 2012 – प्रकाश रंजन मिश्रा अपने मोबाइल पर इन्फॉरमर से बात कर रहे हैं ।

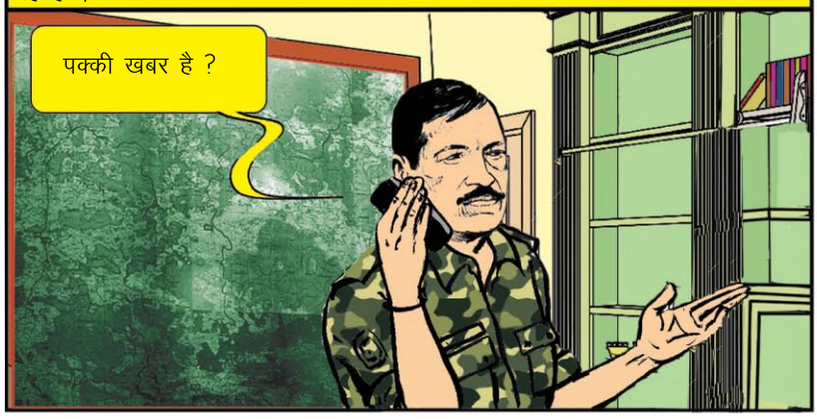

करीब 22 लोगों की टीम को उप–कमांडेन्ट प्रकाश रंजन मिश्रा ब्रीफ कर रहे हैं ।

टीम में सहायक कमांडेन्ट सुजीत कुमार, सहायक कमांडेन्ट कुलदीप कुमार, एसडीपीओ चतरा, एस ए रिजवी, सिपाही प्रकाश कुमार बलिहार, सिपाही मुकेश कुमार बुनकर तथा एसडीपीओ का गार्ड सिपाही संजय यादव और अन्य लोग शामिल है ।

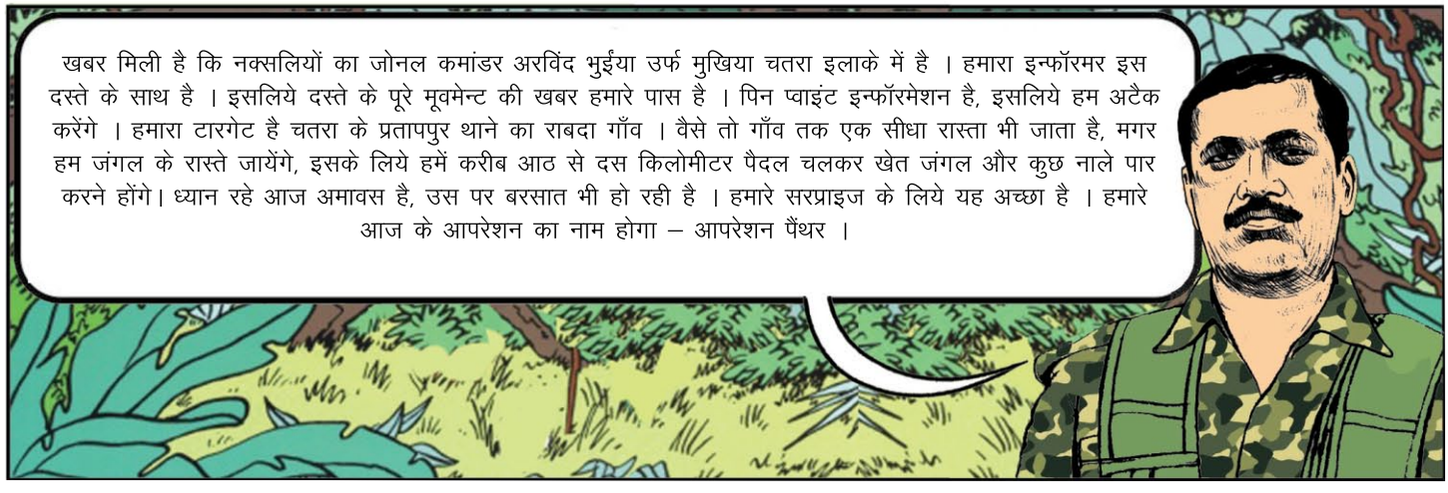

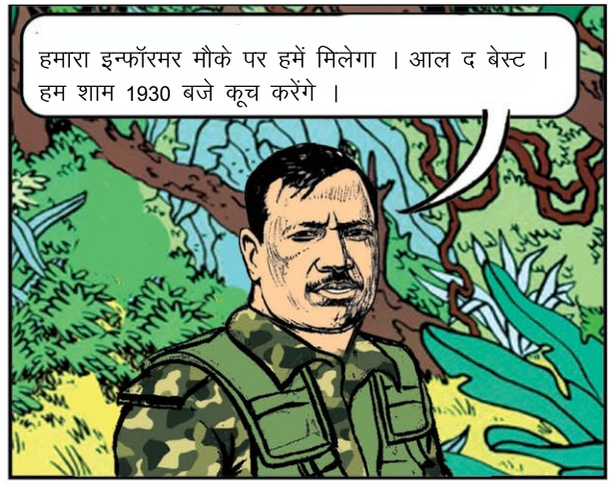

पूरी पार्टी ने शाम 1930 बजे अपने मुख्यालय से कूच किया । पार्टी में कुल 22 सदस्य शामिल थे । घना अंधेरा हो चुका था तथा बारिश भी हो रही थी । पूरी पार्टी जय घोष करती है ।

मुख्य सड़क पर आकर पार्टी ने एक सिविल ट्रक को रोका और उस पर पूरी पार्टी सवार हो गयी । प्रकाश और रिजवी ट्रक में आगे बैठे ।

तेज बारिश के बीच ट्रक हाइवे पर आगे बढ़ता रहा । थोड़ी देर बाद कुछ झटके खाकर ट्रक रूक गया ।

क्या हुआ ?

लगता है कुछ खराबी आ गयी है साहब । मैं देखता हूँ ।

रिजवी तुम सड़क पर किसी दूसरी गाड़ी को रोको ।

रिजवी नीचे उतर जाता है ।

ये ठीक नहीं होगा साहब। मैकेनिक को बुलाना होगा ।

रिजवी अपने लड़कों के साथ एक मिनी बस को रोक लेता है । सभी लोग मिनी बस में सवार होकर वहाँ से निकल जाते हैं ।

दूर जाकर मुख्य मार्ग पर सतवाहिनी में पूरी पार्टी मिनी बस से उतर जाती है ।

यहाँ से आगे हम लोग, जंगल के रास्ते जायेंगे ।

पूरी पार्टी मुख्य मार्ग छोड़कर जंगल में घुस जाती है । कमर तक ऊँची घास को पार करती है ।

बरसाती उफनते नाले को पार करती है ।

घुटने–घुटने पानी से भरे खड़े खेतों को पार करती है ।

और एक जंगली टेकरी पर पहुँच जाती है । उन्हे सामने एक छोटा सा गाँव दिखायी देता है ।

प्रकाश इशारा करता है और पूरी पार्टी सावधानी के साथ आगे बढ़ जाती है ।

पार्टी को टेकरी से उतरते हुये एक गुफा दिखाई देती है ।

सर गुफा है ।

हम चैक करेंगे ।

दो लोग गुफा के मुहाने पर पोजीशन ले लेते हैं, दो लोग गुफा के अंदर जाते हैं, मगर वहाँ कोई नहीं है ।

प्रकाश सबको आगे बढ़ने का इशारा करता है ।

पार्टी गाँव के बाहर एक बगीचे में पहुंच जाती है । पार्टी चारो तरफ देखती हुई सावधानी से आगे बढ़ती है मगर वहाँ भी कोई नहीं है ।

कुछ दूरी पर उन्हे स्कूल की एक इमारत दिखाई देती है । प्रकाश पार्टी को स्कूल की तरफ बढ़ने का इशारा करता है ।

पूरी पार्टी सावधानी के साथ स्कूल की इमारत में प्रवेश करती है, पूरे स्कूल की तलाशी लेती है, मगर वहाँ कोई नहीं है ।

यहाँ भी कोई नहीं है सर ।

प्रकाश फिर फोन लगाता है ।

लग गया..... हैल्लो... हमलोग यहाँ गाँव के बाहर पाठशाला में हैं..... ठीक है ।

फोन काट देता है ।

क्या हुआ ?

इन्फॉरमर आ रहा है, वो हमें टारगेट की पहचान करवा देगा ।

गाँव से एक व्यक्ति कम्बल ओढ़कर निकलता है और दबे पाँव स्कूल तक आता है । स्कूल के अंदर आकर वह चारो तरफ देखता है, पूरी पार्टी छिपाव में है ।

एक आड़ से निकल कर प्रकाश इन्फॉरमर को इशारा करता है ।

इन्फॉरमर तेजी से उसकी तरफ बढ़ता है । प्रकाश उसे भी आड़ में खींच लेता है ।

हम तुरंत अटैक करेंगे । कोई पहरे पर भी है क्या ?
हाँ साहब धीरज यादव पहरे पर है ।
तुम पर किसी को शक तो नहीं हुआ ।
नहीं साहब, मगर ज्यादा देर यहाँ रूका तो हो सकता है । जंगल–पानी का बोल कर आया हूँ ।
घर कौन–सा है ।
जानकी भुईंया के घर पर हैं सब ।
हथियार कितने हैं ?
रघुवंश और धीरज के पास ए.के. 47 है । और भी कई राईफलें हैं सभी के पास ।
ठीक है घर दिखाओ ।
आइये साहब ।
प्रकाश और बाकी लोगों को साथ लेकर बाहर आता है और इशारे से दिखाता है ।
वो जो सामने मकान दिख रहा है ना, मक्का के खेत की बगल में, वही है जानकी भुईंया का मकान ।
ठीक है ।

मै चलता हूँ साहब, ज्यादा देर गायब रहा तो उन्हें शक हो जायेगा ।
ठीक है ।
इन्फॉरमर वहाँ से चला जाता है । प्रकाश अपनी टीम को इशारा करता है, पूरी टीम उसके इर्द गिर्द आ जाती है ।
अरविंद, रघुवंश, धीरज सब मौजूद हैं घर में । बहुत बड़ा मौका है हम लोगों के लिये । सुबह के साढ़े तीन बज रहे हैं । हम तुरंत अटैक करेंगे, वरना निकल जायेंगे ये लोग। वो मक्का के खेत के बगल वाला मकान है ।
कुलदीप और सुजीत तुम दोनो अपनी अपनी पार्टी के साथ घर के दोनों तरफ नक्सलियों के भागने का रास्ता रोको । मैं और रिजवी अपनी पार्टी के साथ सामने से धावा बोलेंगे । ओके, आल द बेस्ट ।
पूरी पार्टी तीन हिस्सों में बँटकर आगे बढ़ जाती है ।
प्रकाश अपनी पार्टी के साथ आगे बढ़कर एक पेड़ के पीछे पोजीशन ले लेता है ।
उसकी पार्टी में रिजवी, सिपाही मुकेश कुमार बुनकर, प्रकाश चन्द्र बलिहार, खालको, और रिजवी के गार्ड संजय यादव और अन्य सिपाही हैं ।
सर, घर में तो कोई हरकत नजर नहीं आ रही ।

हाँ इन्फॉरमर तो बता रहा था कि नक्सलियों ने एक संतरी भी लगाया हुआ है ।

फिर क्या करें, कहीं ऐसा तो नही, जब इन्फॉरमर यहाँ आया हो आपके पास, तो पीछे से नक्सली निकल गये हों ।

हाँ, हो सकता है, हम लोग अब और इंतजार नही कर सकते ।

सर, सर, घर से कोई निकल रहा है ।

सब घर की तरफ देखते हैं । एक औरत एक हाथ में लोटा लिये और दूसरे हाथ से एक बच्ची का हाथ पकड़े घर से निकलती है और जंगल की तरफ बढ़ जाती है ।

जंगल–पानी के लिये जा रही है ।

लगता है पूरे गाँव में कुछ ही देर में जाग हो जायेगी । मैं बलिहार, बुनकर और खालको के साथ सामने के दरवाजे की तरफ जाऊँगा, रिजवी तुम अपने दोनो लड़कों के साथ हमें कवर देना ।

यस सर ।

प्रकाश, सिपाही बुनकर, बलिहार और खालको के साथ कोहनियों के बल रेंगता हुआ घर के दरवाजे तक आ जाता है ।

रिजवी भी अपने सिपाहियों के साथ कुछ ही दूर पोजीशन ले लेता है ।

प्रकाश दरवाजे के पास वाली खिड़की से अंदर देखने की कोशिश करता है मगर कुछ दिखाई नही देता ।

बुनकर कोहनियों के बल रेंगता हुआ घर के पास जाता है, धीरे से उठकर अंदर झांकता है और फिर उसी तरह वापस लौट आता है ।

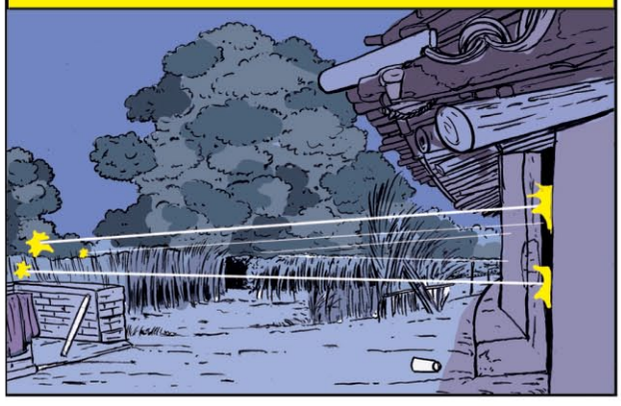

ठीक है मुझे कवर देना ।
सावधानी से दरवाजे के पास जाता है और उसे लात मारकर खोल देता है।
तभी अंदर से और बाहर से भी फायर आने लगता है । और बगल के मक्का के खेत से भी ।
प्रकाश खुद को बचाता हुआ फायर करते हुए बाहर की तरफ आता है ।
तभी मक्का के खेत से एक नक्सली निशाना लेकर गोली चलाता है । गोली प्रकाश की जांघ को चीरकर निकल जाती है । प्रकाश फौरन दीवार की आड़ लेकर बैठ जाता है ।
आह...
आह...
बुनकर पलट कर मक्का के खेत की तरफ फायर करता है । वहाँ नक्सली चोट के कारण चिल्लाता हुआ नीचे बैठ जाता है ।
आह...
आह...
आप ठीक हैं सर ?
मैं ठीक हूँ, तुम उस मक्का के खेत से फायर कर रहे नक्सली को इंगेज करो। मैं और बलिहार इन्हें रोकते हैं ।

तभी कमरे के अन्दर छिपे नक्सली आड़ लेकर लगातार फायर करने लगते हैं ।

बुनकर मक्का के खेत की तरफ से फायर कर रहे नक्सली की ओर फायर करने लगता है । बलिहार भी उसके साथ है ।

प्रकाश, खालको और रिजवी अपने साथियों के साथ घर के अंदर से आ रहे फायर का जबाव देते हैं ।

तभी अंदर से एक नक्सली अपनी ए.के. 47 से फायर करता हुआ बाहर आता है। उसकी एक गोली प्रकाश के कान के पास से निकल कर उसकी खोपड़ी की खाल छीलती हुई उसके पीछे पोजीशन लिये बुनकर की दाँयी आँख में लगती है । बुनकर अपनी आँख पकड़कर लड़खड़ा जाता है ।

प्रकाश पलट कर उसे देखता है ।

प्रकाश नक्सली पर फायर करता है, नक्सली आड़ ले लेता है ।

खालको आगे बढ़कर बुनकर को संभालता है साथ ही मक्का की खेत की तरफ भी फायर करता है ।

सर गोली तो आँख के पार हो गयी लगती है ।

मै ठीक हूँ सर मेरी चिंता मत कीजिये ।

गहरी चोट लगी होने के बावजूद वह अपनी राईफल से मक्का के खेत की तरफ फायर करता है।

धाँय..

खालको देखता है कि घर के अंदर वाला नक्सली प्रकाश को निशाना बना रहा है ।

संभलिये सर, सामने से ।

तभी नक्सली अपनी राईफल से एक पूरा बर्स्ट प्रकाश की तरफ फायर कर देता है । चार गोलियाँ प्रकाश के दाहिने कंधे और छाती के बीच घुस जाती हैं । प्रकाश गिरते–गिरते भी अपनी राईफल से नक्सली की ओर फायर करता है । नक्सली वहीं ढेर हो जाता है ।

आह...

आह...

धाँय...

तभी अंदर से दूसरा नक्सली फायर करता हुआ निकल आता है ।

प्रकाश उस पर भी फायर करता है, एक गोली नक्सली की टाँग में लगती है और वह चिल्ला कर लँगड़ाता हुआ आड़ पकड़कर फायर करता है ।

उसकी गोली रिजवी के गार्ड संजय यादव की जांघ में लगती है और वह दर्द से चिल्लाने लगता है ।

आह...

आह...

नक्सली मौका पाकर दीवार से पीछे कूद जाता है ।

रिजवी इसे बोलो चिल्लाये नहीं । अगर नक्सलियों को अहसास हो गया कि हम जख्मी हो गये हैं, तो वो हमें छोड़ेंगे नहीं ।

सभी दम साधे अपनी जगह पड़े रहते हैं । गोलियों की आवाज कुछ कम होती जा रही है।

लगता है वो लोग भाग रहे हैं सर ।

हम लोग पीछा करने की पोजीशन मे नहीं है । उन्हे स्टॉप पार्टियां संभाल लेगी। बलिहार, बुनकर कैसा है ।

मै ठीक हूँ सर, बस खून बहुत बह रहा है ।

बहुत दर्द हो रहा है ?

हँसने की कोशिश करता है

मर्द को दर्द नही होता सर ।

गुड ।

मै अभी फर्स्ट–एड दे देता हूँ । मगर सर, आपका भी बहुत खून बह रहा है ।

तुम पहले बुनकर को देखो, उसका खून रोको, मोरफिन का इन्जेक्शन दो । दर्द कम हो जायेगा ।

बलिहार आगे बढ़कर बुनकर को फर्स्ट एड देता है ।

खालको प्रकाश की पट्टी बाँधने में मदद करता है ।

बुनकर ठीक हो ना ? चुप मत रहो, कुछ बोलते रहो ।

मै ठीक हूँ सर, मेरी चिंता मत कीजिये । लगता है मेरी एक आँख गयी । आगे से सभी को एक ही आँख से देखूंगा ।

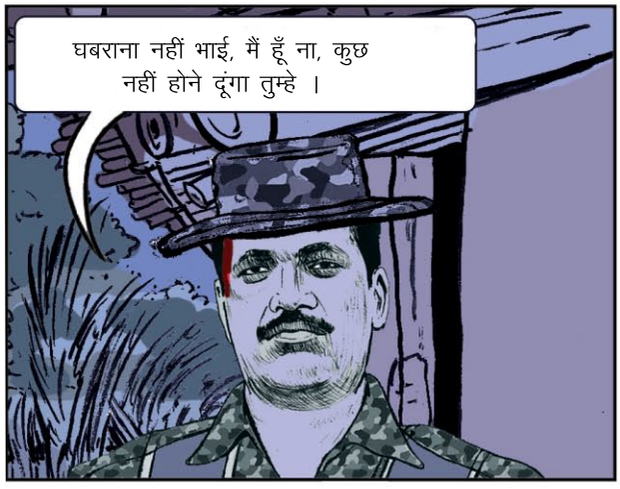
घबराना नहीं भाई, मैं हूँ ना, कुछ नहीं होने दूंगा तुम्हे ।

हाँ सर, नक्सलियों को अच्छा सबक सिखाया हमने । कितने मारे सर ?
एक तो सामने पड़ा है, बाकी पता नहीं ।

आपको भी काफी चोट लगी है सर ।

हाँ, मगर निश्चिंत रहो, मुझे कुछ नहीं होगा।

तभी रिजवी वहाँ आता है ।
सर आप ठीक हैं ?
संजय कैसा है, ये बताओ ?

गोली लगी है जांघ में, मैंने पट्टी बांध दी है ।

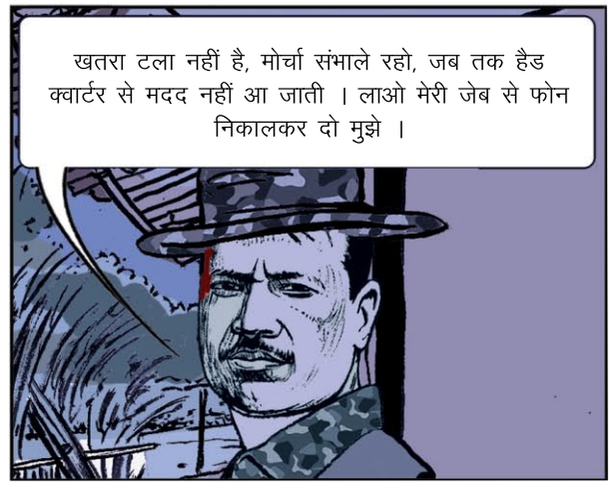
खतरा टला नहीं है, मोर्चा संभाले रहो, जब तक हैड क्वार्टर से मदद नहीं आ जाती । लाओ मेरी जेब से फोन निकालकर दो मुझे ।

फोन लेकर नंबर मिलाकर बात करता है ।

सर प्रकाश रंजन..... सर मदद चाहिये..... राबदा गाँव..... तुरंत..... हम तीन लोग घायल हुये हैं ।

फोन काटकर

बुनकर ।

जी सर ।

घबराना नहीं बेटे, हम सब तुम्हारे साथ हैं, मदद आ रही है ।

जी सर ।

कुछ देर में कमांडेन्ट 203 कोबरा संजय कुमार सिंह और एस पी चतरा अनूप बिरथरे अपनी जीप लेकर वहाँ पहुंच गये ।

घायलों को तुरंत जीप द्वारा बेस कैम्प ले जाया गया ।

फिर सीमा सुरक्षा बल के हैलिकाप्टर ध्रुव के द्वारा रांची ।

इस आपरेशन में एक कुख्यात नक्सली जितेन्द्र उर्फ जीतू मारा गया । नक्सली कमांडर रघुवंश और उसके कुछ साथी गंभीर रूप से घायल हुये जिन्हें उनके साथी अपने कंधो पर डालकर भाग गये ।

घटना स्थल से एक ए.के. 47, एक .38 रिवाल्वर, एक अमेरिकन सेमी आटोमैटिक राईफल, एक .315 राईफल, दो .303 पुलिस राईफल, 318 जिंदा राउण्ड, एक वायरलैस सैट और 40000 रुपये नगद बरामद किये गये ।

इस आपरेशन में उप–कमांडेन्ट प्रकाश रंजन मिश्रा की बायीं जांघ में एक गोली लगी । एक गोली उनके कान के पास सिर की खाल को छीलती हुई निकल गयी तथा चार गोलियाँ उनके दाहिने कंधे और छाती के बीच लगी । इस कदर घायल होने के बावजूद प्रकाश रंजन मिश्रा बहादुरी के साथ अपनी पार्टी की कमान संभाले रहे और नक्सलियों का मुकाबला उन्हीं के ठिकाने में कर उन्हें शिकस्त दी ।

इस अदम्य वीरता, नेतृत्व कौशल, साहस और जीवटता के लिये उप–कमांडेन्ट प्रकाश रंजन मिश्रा को शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया । यह सम्मान उन्हें प्रदान किया भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी ने । श्री प्रकाश रंजन मिश्रा को मिलने वाला वीरता का यह लगातार छठा सर्वोच्च पदक था। किन्तु इसी के साथ श्री प्रकाश रंजन मिश्रा का नक्सलियों के विरूद्ध संघर्ष समाप्त नहीं हुआ ।

एडीशनल एस.पी. आपरेशन खूंटी झारखण्ड के पद पर रहते हुए श्री प्रकाश रंजन मिश्रा ने 23 जुलाई, 2014 को पुनः एक कारनामा किया और अपनी टीम के साथ खूंटी और रांची इलाके में सक्रिय कुख्यात नक्सली तुलसीदास उर्फ विशाल को एक भीषण मुठभेड़ में मार गिराया और एक ए.के. 47 राइफल सहित भारी गोली–बारूद बरामद किया । इस वीरता के लिए पुनः श्री प्रकाश रंजन मिश्रा बहादुरी के सातवें पुलिस पदक से सम्मानित किये गए जो देश के सुरक्षा बलों के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण है ।

18 सितम्बर, 2012 को झारखंड राज्य के चतरा जिले के प्रतापपुर थाना क्षेत्र के जूरी राबदा गाँव में माओवादियों के साथ हुई एक मुठभेड़ में शौर्य और साहस के एक अद्वितीय उदाहरण की स्थापना हुई जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के सर्वाधिक अलंकृत अधिकारी श्री प्रकाश रंजन मिश्रा, उप–कमांडेंट ने एक आपरेशन का नेतृत्व कर माओवादियों के एक बड़े नेता को न सिर्फ मार गिराया अपितु कई नक्सलियों को घायल कर उनके संगठन को भी भारी क्षति पहुंचायी।

इस आपरेशन में उप–कमांडेंट प्रकाश रंजन मिश्रा की बायीं जांघ में एक गोली लगी, एक गोली उनके कान के पास सिर की खाल को छीलती हुई निकल गयी तथा चार गोलियाँ उनके दाहिने कंधे और छाती के बीच लगी। इस कदर घायल होने के बावजूद श्री प्रकाश रंजन मिश्रा, उप–कमांडेंट बहादुरी के साथ अपनी पार्टी की कमान संभाले रहे और नक्सलियों का मुकाबला उन्हीं के ठिकाने में घुस कर उन्हें शिकस्त दी।

इस अदम्य वीरता, नेतृत्व कौशल, साहस और जीवटता के लिये श्री प्रकाश रंजन मिश्रा, उप–कमांडेंट को शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें प्रदान किया भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी ने।

श्री प्रकाश रंजन मिश्रा को मिलने वाला वीरता का यह लगातार छठा सर्वोच्च पदक था। इस पदक के बाद भी एडीशनल एस पी खूंटी, झारखंड के पद पर रहते हुए श्री प्रकाश रंजन मिश्रा को सातवीं बार वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया, जो देश के सुरक्षा बलों के इतिहास में किसी एक अधिकारी को मिलने वाले सर्वाधिक वीरता के पुलिस पदक हैं।

अलंकरण

श्री प्रकाश रंजन मिश्रा, उप–कमांडेंट, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सर्वाधिक वीरता के पदकों से सम्मानित अधिकारी हैं। उन्हें मिलने वाले वीरता के पदकों में शौर्य चक्र के अतिरिक्त एक राष्ट्रपति का वीरता का पुलिस पदक तथा पाँच वीरता के पुलिस पदक भी शामिल हैं।

शौर्य चक्र
26 जनवरी, 2014

राष्ट्रपति का वीरता का पुलिस पदक
26 जनवरी, 2012

वीरता का पुलिस पदक
15 अगस्त, 2015
26 जनवरी, 2014
15 अगस्त, 2011
26 जनवरी, 2011
26 जनवरी, 2009

महानिदेशक केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की प्रशंसा डिस्क
7

महानिदेशक झारखंड पुलिस की प्रशंसा डिस्क
5

पुलिस पब्लिक प्रैस नेशनल अवार्ड
2014 और 2015

जी अनन्य अवार्ड
13 दिसबंर, 2011

भागीरथी शौर्य सम्मान
28 नवंबर, 2012

सरदार पोस्ट
एक शौर्य गाथा

9 अप्रैल, 1965 को गुजरात के रण आफ कच्छ में वीरता, साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गयी जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तनी ब्रिगेड को न केवल धूल चटा दी बल्कि उसे पराजित कर पीछे लौटने पर भी मजबूर कर दिया। दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज एक अनूठी शौर्य गाथा।

वीर भृगुनंदन

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की कहानी वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है। यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगे गवा देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा। यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था। उसी स्थिति में भी उसने न केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा बल्कि अपने घायल साथी की भी मदद की।

पढ़िये और जानिये अपने वीर सेनानियों के हैरत अंगेज वीरता के कारनामों को।

श्री प्रकाश रंजन मिश्रा, उप–कमांडेंट, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के सर्वाधिक अलंकृत अधिकारी हैं। वीरता के सर्वोच्च सम्मान शौर्य चक्र से सम्मानित श्री प्रकाश रंजन मिश्रा एक राष्ट्रपति के वीरता के पुलिस पदक और पाँच वीरता के पुलिस पदकों से भी सम्मानित किये जा चुके हैं।

18 सितम्बर, 2012 को झारखंड राज्य के चतरा जिले के प्रतापपुर थाना क्षेत्र के जूरी राबदा गाँव में माओवादियों के साथ हुई एक मुठभेड़ में शौर्य और साहस का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए श्री प्रकाश रंजन मिश्रा, उप–कमांडेंट ने एक आपरेशन का नेतृत्व कर माओवादियों के एक बड़े नेता को न सिर्फ मार गिराया अपितु कई नक्सलियों को घायल कर उनके संगठन को भी भारी क्षति पहुंचायी। इस आपरेशन में भारी मात्रा में हथियार एवं गोली–बारूद बरामद किया गया। आपरेशन के दौरान एक गोली जांघ में, चार गोली दाहिने कंधे के नीचे सीने पर और एक गोली कान को छीलते हुए निकल जाने के बावजूद श्री प्रकाश रंजन मिश्रा द्वारा प्रस्तुत नेतृत्व कौशल, अद्‌भुत वीरता और साहस के लिये उन्हें वीरता के सर्वोच्च पदक शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया।

देश के सर्वाधिक वीरता के पदकों से सम्मानित जांबाज अधिकारी की वीरता की दास्तान कॉमिक प्रारूप में।